Class -12 Subject: hindi(piyush prawah) Topic-ch.2(सत्य के प्रयोग)

प्रश्न/उत्तर करो।

प्रश्न 1.

'आहार नीति' पुस्तक में किनके विचारों का वर्णन किया गया है?

उत्तर:

'आहार नीति' नामक पुस्तक में अलग-अलग युगों के ज्ञानियों, अवतारों और पैगम्बरों के आहार और उनके आहार विषयक विचारों का वर्णन किया गया है।

प्रश्न 2.

गाँधी जी के अनुसार आत्मज्ञान प्राप्ति के बारे में लोगों ने क्या भ्रम फैला रखा है?

उत्तर:

गाँधी जी के अनुसार आत्मज्ञान प्राप्ति के बारे में यह भ्रम फैला हुआ है कि आत्मज्ञान चौथे आश्रम में प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3.

'हिन्द स्वराज्य' पर गाँधी जी के विचारों का मजाक उड़ाते हुए गोखले ने क्या कहा?

उत्तर:

गाँधी जी के 'हिन्द स्वराज्य' का मजाक उड़ाते हुए गोखले ने कहा था कि आप एक वर्ष हिन्दुस्तान में रहकर देखेंगे, तो आपके विचार अपने आप ठिकाने आ जाएँगे।

प्रश्न 4.

शान्तिनिकेतन में बरतन माँजने वाली टुकड़ी थकान उतारने के लिए क्या करती थी?

उत्तर:

शान्तिनिकेतन में बरतन माँजने वाली टुकड़ी की थकान उतारने के लिए कुछ विद्यार्थी वहाँ सितार बजाते थे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1.

बेल साहब ने गाँधी के जीवन-प्रवाह को किस तरह प्रभावित किया?

उत्तर:

गाँधी जी सभ्य कहलाने का प्रयत्न कर रहे थे और उन्होंने अपने जीवन में बहुत परिवर्तन करने का प्रयास भी किया। लेकिन बेल साहब ने उनके जीवन-प्रवाह को बदल दिया। उन्होंने सोचा कि मुझे इंग्लैण्ड में नहीं रहना है। इसलिए लच्छेदार भाषण बन्द कर दिया । नाचना सीखना छोड़ दिया क्योंकि इससे सभ्य नहीं बना जा सकता। वायोलिन सीखना भी बन्द कर दिया और उसे बेचने के लिए कहा। वायोलिन अपने देश में भी सीखा जा सकता था। वायोलिन शिक्षिका ने भी उनकी बात का समर्थन किया। बेल साहब ने गाँधीजी को सभ्य बनने की सनक को समाप्त करके उनके जीवन-प्रवाह को ही बदल दिया।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2.

दण्ड देने के औचित्य में गाँधी जी को क्या शंका थी?

उत्तर:

गाँधी जी मारपीट कर पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे। दण्ड के औचित्य के सम्बन्ध में उन्हें शंका थी क्योंकि उसमें क्रोध भरा था और दण्ड देने की भावना थी । यदि उसमें केवल गाँधी जी के दुःख का ही प्रदर्शन होता, तो वे उस दण्ड को उचित समझते । पर उसमें भावना मिश्रित थी। इसके बाद उन्होंने विद्यार्थियों को दण्ड नहीं दिया और सुधारने की अच्छी रीति सीख ली क्योंकि उन्हें दण्ड द्वारा किसी को सुधारने में शंका थी।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3.

गोखले ने गाँधी जी को क्या प्रतिज्ञा करवाई?

उत्तर:

वर्दवान और ऐण्डुज ने गाँधी जी से पूछा कि यदि सत्याग्रह करने का अवसर आएगा तो आप कब आयेंगे। इस पर गाँधी जी ने उत्तर दिया कि अभी एक वर्ष तक मुझे कुछ नहीं करना है क्योंकि गोखले ने मुझसे प्रतिज्ञा करवायी है कि उन्हें एक वर्ष तक देश में भ्रमण करना है, किसी सार्वजनिक प्रश्न पर अपना विचार न तो बनाना है, न प्रकट करना है और मैं इस प्रतिज्ञा का अक्षरश: पालन करूंगा। बाद में यदि किसी प्रश्न का उत्तर देने की जरूरत होगी तो कुछ कहूँगा। पाँच वर्ष तक सत्याग्रह करने का अवसर आयेगा मैं (गाँधी) नहीं समझता । गाँधी ने प्रतिज्ञा का पूर्ण पालन किया।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4.

'फीनिक्स का रसोईघर स्वावलम्बी बन गया था'-कैसे?

उत्तर:

फीनिक्स का रसोईघर स्वावलम्बी बन गया। सब अपना काम अपने आप करने लगे। गाँधी ने प्रस्ताव रखा कि विद्यार्थी स्वयं भोजन बनाएँ, इससे भोजन सादा और शुद्ध बनेगा। शिक्षक समाज का प्रभुत्व स्थापित होगा। कुछ को यह प्रयोग अच्छा लगा। विद्यार्थियों को यह बात अच्छी लगी। पियर्सन को यह प्रस्ताव बहुत अच्छा लगा। एक मण्डली साग काटने वाली बनी, दूसरी अनाज साफ करने वाली बनी। रसोईघर के आस-पास शास्त्रीय ढंग से सफाई रखने के काम में नगेनबाबू आदि जुट गये। पियर्सन ने बरतन साफ करने का काम लिया। बड़े-बड़े बरतन माँजने का काम उन्हीं का था। विद्यार्थियों ने प्रत्येक कार्य को उत्साह से अपना लिया। इस प्रकार फीनिक्स का रसोईघर स्वावलम्बी बन गया।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1.

गाँधी जी ने सभ्य बनने के लिए जो प्रयोग किए, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

गाँधी जी अपने मित्र से असभ्य नहीं कहलाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने सभ्यता सीखने के लिए अपनी सामर्थ्य से परे का छिछला रास्ता अपनाया। बम्बई के सिले कपड़े अंग्रेज समाज में शोभायमान नहीं लगेंगे इसलिए उन्होंने आर्मी और नेवी स्टोर से कपड़े सिलवाए और बड़ी राशि व्यय की। फिर बॉण्ड स्ट्रीट से कपड़े सिलवाये। दोनों जेबों में लटकाने वाली सोने की चेन मँहगाई। बँधी-बँधाई टाई पहनना असभ्यता की निशानी थी। अत: टाई बाँधना सीखा और बहुत समय आईने के सामने व्यतीत किया। आईने के सामने खड़े होकर बालों में पट्टी डालकर सीधी माँग निकालने में रोज दस मिनट का समय व्यय किया। बालों को ठीक रखने के लिए ब्रश के साथ रोज लड़ाई लड़ी। माँग को सहेजने के लिए बार-बार सिर पर हाथ फेरते जिससे बाल व्यवस्थित रह सके।

Scanned with CamScanner

पोशाक से ही सभ्य नहीं बना जा सकता था, कुछ और भी करना था। नाचना सभ्यता की निशानी है। अत: नाचना सीखा। फ्रेंच भाषा सीखी क्योंकि वह सारे यूरोप की राष्ट्रभाषा थी । यूरोप में घूमने के लिए फ्रेंच जानना आवश्यक था। छेदार भाषण कला भी आनी चाहिए। नाचना सीखने के लिए तीन पौण्ड जमा किए। पियानो बजता पर कुछ समझ में नहीं आता था। इस तरह सभ्य बनने का लोभ बढ़ता गया। वायोलिन बजाना सीखने का प्रयास भी किया। तीन पौण्ड में वायोलिन खरीदा। भाषण कला सीखने के लिए शिक्षक का सहारा लिया। इस प्रकार सभ्य बनने का भरसक प्रयत्न किया। किन्तु बेल साहब को घण्टी ने सारे अरमान ठण्डे कर दिये और विद्या धन बढ़ाने की ओर झुकाव हो गया। मित्र पर चाहे कुछ प्रभाव पड़ा हो पर गाँधीजी को सन्तुष्टि अवश्य हुई और झूठी सभ्यता की टीम-टाम से मुक्ति मिल गई।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2.

संकलित आत्मकथांश के आधार पर गाँधी जी के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

आत्मकथा के पाँच अंश यहाँ संकलित हैं। इनके आधार पर गाँधी जी के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

सभ्य जीवन – गाँधी जी का विश्वास था कि विद्यार्थी को सादा और सभ्य जीवन व्यतीत करना चाहिए। गाँधी जी ने मित्र के सम्मुख सभ्य बनने का प्रयास किया। अपनी पोशाक बदली। इंग्लैण्ड में कीमती पोशाक सिलवाई। नाचना सीखा, भाषण कला सीखी, टाई बाँधना सीखा, बाल सँवारे, वायलिन सीखने का प्रयास किया। किन्तु अन्त में बेल साहब ने आँखें खोल दीं। विद्यार्थी को विद्या-धन अर्जित करने के लिए सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए। सभ्यता की ऊपरी टीम-टाम से दूर रहना चाहिए।

Scanned with CamScanner

अन्नाहार की भावना – गाँधी जी अन्नाहार में विश्वास करते थे। अन्नाहार विषयक कई पुस्तकें थीं, वे उन्होंने पढ़ीं। एलिन्सन । के अनुसार बीमारों को अन्नाहार की सलाह देते थे। बाद में धार्मिक दृष्टि सर्वोपरि बनी।

अन्याय से संघर्ष – गाँधीजी में एक दृढ़ता थी। वे जिस बात का निश्चय कर लेते उसे पूरा करने का प्रयत्न करते। उसके लिए संघर्ष करते। दक्षिण अफ्रीका में काले-गोरे का भेद था। गोरों के प्रति पक्षपात था। दो गोरे अधिकारियों की भ्रष्टता के प्रति उन्होंने प्रमाण एकत्रित कर लिये थे और उन्हें वे दण्ड दिलाना चाहते थे। पुलिस कमिश्नर भी उनके साथ था, किन्तु जूरी ने उन्हें बरी कर दिया। गाँधी को इससे बड़ा दुःख हुआ। यद्यपि उने अधिकारियों का विरोध होने पर उन्हें बरखास्त कर दिया गया। गाँधी के इस प्रयत्न के कारण उनका सम्मान बढ़ गया।

Scanned with CamScanner

सद्भावना – गोरे अधिकारी अधम थे और सरकार ने उन्हें नौकरी से हटा दिया था परन्तु गाँधी के हृदय में उनके प्रति दुर्भावना नहीं थी। उनकी कंगाली को देखकर उन्हें दुःख हुआ और वे उनकी सहायता करने की सोचने लगे और उन्होंने उनकी मदद भी की। वह उन्हें जोहानिस्बर्ग की म्युनिसिपॉलिटी में नौकरी दिलाना भी चाहते थे। उन्होंने नौकरी दिलाने में मदद भी की और उन्हें नौकरी मिल भी गई। स्पष्ट है गाँधी का हृदय साफ था और वे सभी के प्रति सद्भावना रखते थे। वे व्यवस्था और पद्धति के विरुद्ध तो संघर्ष करना चाहते थे पर व्यवस्थापक के प्रति संघर्ष के विरुद्ध थे, क्योंकि सभी एक ही कैंची से रचे गये हैं।

आत्म-निर्माण की भावना – वे शरीर और मन को शिक्षित करने की अपेक्षा आत्म-निर्माण पर अधिक जोर देते थे। वे विद्यार्थियों को अपने धर्म के मूल तत्त्वों को जानने की प्रेरणा देते थे। उनका मानना था कि विद्यार्थियों को अपने धर्म-ग्रन्थों का ज्ञान होना चाहिए, तभी उनकी आत्मा का निर्माण

Scanned with CamScanner

होगा। गाँधी आत्मा के विकास का अर्थ चरित्र का निर्माण करना मानते थे, ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना मानते थे। वे इस भ्रम को दूर करना चाहते थे कि आत्मज्ञान चौथेपन में प्राप्त होता है। वे भजन गाकर, नीति की बातें सुनाकर आत्मज्ञान प्रदान करना चाहते थे। वे यह भी मानते थे कि पुस्तकों से आत्मज्ञान नहीं दिया जा सकता। एक अध्यापक कहीं से भी। विद्यार्थी में आत्म-निर्माण कर सकता है। पर उसे अपना आचरण शुद्ध रखना होगा। वे विद्यार्थी को पीटने के पक्षधर भी नहीं थे।

स्वावलंबन की भावना – गाँधीजी की सबसे बड़ी भावना थी कि वे व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने शान्ति निकेतन में विद्यार्थियों और अध्यापकों को

Scanned with CamScanner

स्वावलम्बी बना दिया। रसोई का काम विद्यार्थियों और अध्यापकों ने सँभाल लिया। कोई साग काटता, कोई बरतन साफ करतो, कोई सफाई करता । प्रत्येक मण्डली अपना-अपना काम स्वेच्छा से करती थी। पियर्सन ने बरतन साफ करने का काम ले लिया। इस प्रकार सभी में स्वावलम्बन की भावना जागृत हो गई।

स्वदेशी की भावना – गाँधीजी मानते थे कि चरखे से हिन्दुस्तान की कंगाली दूर हो सकती है। करघे से कपड़ा बुना जा सकता था पर कोई करघा चलाना नहीं जानता था। सबने निश्चय किया कि अपने बुने कपड़े ही पहनेंगे। देशी मिल में बने हुए सूत के कपड़े पहनेंगे। अपने आप कपड़ा नहीं बुन सकते थे इसलिए कुछ बुनकर, जो देशी सूत से कपड़ा बुन सकते थे उनकी सहायता लेनी पड़ी इस प्रकार

Scanned with CamScanner

देशी सूत से बुनवाकर बना हुआ कपड़ा सभी ने पहना।

प्रश्न 3.

'खादी का जन्म' पाठांश का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

गाँधी यह मानते थे कि चरखे से ही हिन्दुस्तान की कंगाली मिट सकती है। भुखमरी मिटने पर ही स्वराजे मिल सकता है। 1915 में गाँधी दक्षिण अफ्रीका से लौटे पर उन्होंने चरखा नहीं देखा था। आश्रम के खुलने पर करघा शुरू

Scanned with CamScanner

हुआ। गाँधी और आश्रम के आदमी पढ़े-लिखे और व्यापारी थे तथा करघा चलाना नहीं जानते थे। करघा मिलने पर भी सिखाने वाला कोई नहीं था। काठियावाड़ और पालनपुर से करघे के साथ सिखाने वाला भी मिला। मगनलाल गाँधी के हाथ में कारीगरी थी इसलिए उन्होंने करघा चलाना सीख लिया और आश्रम में नये-नये बुनने वाले तैयार हुए।

आश्रम के लोगों को अपने तैयार किये हुए कपड़े पहनने थे। यह निश्चय किया गया कि हाथकरघे से बना देशी मिल के सूत का कपड़ी पहना जाए। हिन्दुस्तान के कारीगरों की गरीबी और कर्जदारी का पता लगा। सभी अपना कपड़ा स्वयं बुन सकें ऐसी स्थिति नहीं थी। अत: बाहर के बुनकरों से कपड़ा बुनवाना पड़ता था। यहाँ की मिलें महीन सूत नहीं

Scanned with CamScanner

कात सकती थीं। देशी मिल सूत का बुना कपड़ा शीघ्र मिलता भी नहीं था। इस कारण विलायती सूत का कपड़ा ही तैयार होता था। कुछ समय बाद बुनकर मिलें जिन्होंने देशी सूत से कपड़ा तैयार करने की मेहरबानी की परन्तु उन्हें यह विश्वास दिलाना पड़ा कि उनका कपड़ा खरीद लिया जाएगा। मिलों के सम्पर्क में आने पर उनकी व्यवस्था बिगड़ी और बुनकरों की लाचारी का भी पता चला। मिलें खुद का कपड़ा तैयार करतीं। हाथकरघे की सहायता अनिच्छा से लेतीं । पराधीनता से मुक्ति के लिए हाथ से कातना अनिवार्य हो गया।

करघा और उसके चलाने वालों का अभाव था। कालिदास वकील एक महिला को लाए भी पर उसको हुनर हाथ नहीं लगा। गाँधी जी मित्र के साथ भौंच शिक्षा परिषद् में गये। वहाँ एक साहसी विधवा बहन गंगाबाई मिलीं। गाँधी जी ने उससे अपनी व्यथा कही। गंगाबाई ने गाँधी जी की समस्या को समझा और उनकी चिन्ता दूर की।

Scanned with CamScanner